

संतापन पुं. (तत्.) 1. तप्त करने की क्रिया, ताप देने का कार्य, जलाने का कार्य 2. शारीरिक अथवा मानसिक कष्ट देना 3. कामदेव के पाँच बाणों में से एक बाण।

संतापी वि. (तत्.) 1. शारीरिक अथवा मानसिक कष्ट देने वाला 2. अन्य किसी के दुःख के प्रति संवेदनहीन होने वाला, दूसरे के विषाद से खुश होने वाला।

संताप्य वि. (तत्.) 1. तप्त करने के लिए उपयुक्त ताप देने योग्य, गर्म करने के लायक 2. पीड़ा अथवा कष्ट पहुँचाने लायक।

संति स्त्री. (तत्.) 1. नाश, अवसान, अंत 2. दान।

संती अव्य. (तत्.) 1. के द्वारा 2. बदले में।

संतुलन पुं. (तत्.) 1. तोलने के समय तुला के दोनों पलड़े बराबर होने की स्थिति 2. दो दलों में सभी सुविधाएँ एवं असुविधाएँ समान होने की स्थिति, दो पक्षों का बल बराबर होने की स्थिति।

संतुष्ट वि. (तत्.) जिसको संतोष हो चुका हो, जो तृप्त हो गया हो, प्रसन्न, खुश, दुविधा से मुक्त।

संतुष्टि स्त्री. (तत्.) भरपूर संतोष का भाव, पूरी तरह से संतुष्ट होने का भाव।

संतूर पुं. (फा.) सितार की जैसी तारों पर आधारित सूप के आकार का एक वाद्ययंत्र, जिसको धातु की ऐसी कलमों से बजाया जाता है, जो आगे से मुड़ी हुई होती हैं, कश्मीर का प्रसिद्ध सूफी वाद्य यंत्र।

संतोष पुं. (तत्.) मन की पूर्ण तृप्ति का भाव, वस्तु, पदार्थ अथवा वैभव की अधिक लालसा न होने का भाव।

संतोषी वि. (तत्.) मन की तृप्ति, अधिक आकाँक्षा रहित, संतुष्ट।

संतोष्य वि. (तत्.) संतुष्ट किया जाने योग्य।

संत्रस्त वि. (तत्.) जिस को डराया गया हो, भयभीत, आतंकित।

संथा स्त्री. (देश.) एक बार में पढ़ा अथवा पढ़ाया हुआ पाठ।

संदर्भ पुं. (तत्.) पाठ के किसी अंश को स्थापित करने के लिए किसी और पाठ अथवा पुस्तक का उदाहरण, हवाला, उद्धरण।

संदर्भग्रंथ पुं. (तत्.) 1. संदर्भित ज्ञान के अध्ययन हेतु लिखा गया ग्रंथ 2. संदिग्ध सूचनाएँ परखने के लिए लिखा गया ग्रंथ, शंका निवारण हेतु उपयोग में लाया जाने वाला ग्रंथ।

संदर्भ साहित्य पुं. (तत्.) संदर्भ के रूप में उपयोग की जाने वाली संपूर्ण सामग्री जैसे- कोश, विश्वकोश, थिसारिस आदि।

संदर्भिका स्त्री. (तत्.) शोध ग्रंथ आदि के अंत में उपयोग में लाई गई, पुस्तकों की सूची, अनुसंधानात्मक ग्रंथ लिखने के लिए प्रयोग में लाई गई पुस्तकों की सूची (ग्रंथ के अंत में दर्ज) संदर्भ-ग्रंथ-सूची।

संदर्शन पुं. (तत्.) किसी वस्तु अथवा स्थिति को समीक्षात्मक दृष्टि से परखने का कार्य, अच्छी तरह से देखने-परखने का कार्य।

संदल पुं. (फा.) दक्षिण भारत में उगने वाले एक पेड़ की सुगंधित लकड़ी, चंदन।

संदली वि. (फा.) 1. चंदन का, चंदन की लकड़ी से निर्मित 2. चंदन के रंग का हल्का पीला रंग।

संदष्ट वि. (तत्.) 1. दाँतों के बीच में दबाया हुआ 2. कुचला हुआ, रौंदा हुआ।

संदान पुं. (तत्.) 1. किसी वस्तु को काटने का कार्य 2. किसी को बाँधने का कार्य 3. हाथी के मस्तक का वह भाग जहाँ से मद टपकता है 4. एक प्रकार की निहाई, जिस पर रख कर धातु को पीटा जाता है 5. रस्सी।

संदानिनी स्त्री. (तत्.) गौधन को सुरक्षित रूप से बाँध कर रखा जाने वाला स्थल, गौशाला।

संदाह पुं. (तत्.) मुख के भीतर की जलन, होठों अथवा जीभ की जलन।